समानता की शुरुआत कक्षा से होनी चाहिए: भारत के लिए सर्वोच्च न्यायालय का संदेश

UPSC प्रासंगिकता:

- **सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र I –** भारतीय समाज, सामाजिक गतिशीलता और समानता के साधन के रूप में शिक्षा।
- **सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र II –** राजव्यवस्था और शासन - अनुच्छेद 21A और शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE), 2009।

IAS-PCS Institute

चर्चा में क्यों?

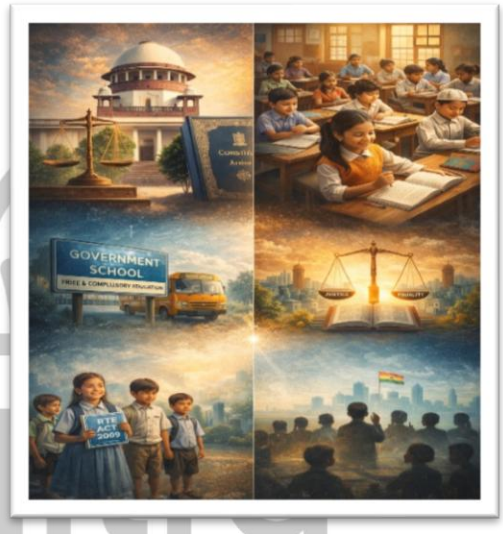

जनवरी 2026 में, भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने यह टिप्पणी की कि समाज में वास्तविक समानता की शुरुआत स्कूलों से होनी चाहिए, जहाँ सभी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे एक साथ पढ़ते हैं। न्यायालय ने दोहराया कि शिक्षा का अधिकार (RTE)

अधिनियम, 2009 का प्रभावी कार्यान्वयन एक राष्ट्रीय मिशन है, जो सामाजिक न्याय और संवैधानिक समानता प्राप्त करने के लिए अनिवार्य है।

निर्णय का संवैधानिक और कानूनी आधार

भारत के संवैधानिक ढांचे में शिक्षा का केंद्रीय स्थान है:

Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

- **अनुच्छेद 21A:** यह 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा की गारंटी देता है।
- **शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009:** यह कानून पड़ोस में स्कूलों को अनिवार्य बनाकर और कमजोर एवं वंचित वर्गों के बच्चों के प्रवेश को सुनिश्चित करके इस अधिकार को लागू करता है। यह ढांचा केवल स्कूल तक औपचारिक पहुंच प्रदान करने के बजाय, संविधान की प्रस्तावना में किए गए प्रतिष्ठा, अवसर की समानता और बंधुत्व के वादे को साकार करने का लक्ष्य रखता है।

उदाहरण के लिए: मोहिनी जैन बनाम कर्नाटक राज्य (1992) और उन्नीकृष्णन बनाम आंध्र प्रदेश राज्य (1993) के मामलों में, सर्वोच्च न्यायालय ने शिक्षा को जीवन के अधिकार का अभिन्न अंग माना था, जिसने अनुच्छेद 21A की नींव रखी।

सर्वोच्च न्यायालय ने क्या कहा?

1. साथ मिलकर सीखने से समानता पैदा होती है: न्यायालय ने इस बात पर जोर दिया कि साझा कक्षाएं जाति, वर्ग और आय के आधार पर बनी सामाजिक पदानुक्रम को खत्म करने में मदद करती हैं। *उदाहरण:* वर्तमान मामले में, एक कमजोर वर्ग के माता-पिता को सीटें खाली होने के बावजूद प्रवेश देने से मना कर दिया गया था। यह दर्शाता है कि कैसे बहिष्कार की प्रक्रिया शांत और नियमित रूप से चलती है। न्यायालय ने इस अनुभव का उपयोग यह बताने के लिए किया कि सामाजिक समानता के लिए स्कूलों में शारीरिक एकीकरण क्यों आवश्यक है।

2. RTE अधिनियम का उद्देश्य समाज को बदलना है: न्यायालय ने RTE अधिनियम को "मानक रूप से महत्वाकांक्षी" बताया, जिसका अर्थ है कि इसका उद्देश्य केवल नामांकन बढ़ाना नहीं, बल्कि सामाजिक संबंधों को नया आकार देना है। *तुलनात्मक उदाहरण:* फिनलैंड जैसे देश सार्वजनिक स्कूली शिक्षा पर जोर देते हैं जहाँ निजी अलगाव बहुत कम है। इसने उच्च शिक्षण परिणामों और कम सामाजिक असमानता में योगदान दिया है, जो यह दर्शाता है कि साझा स्कूली शिक्षा सामाजिक एकजुटता का समर्थन करती है।

3. राज्य और न्यायालयों का कर्तव्य: न्यायालय ने माना कि RTE के तहत प्रवेश सुनिश्चित करना एक संवैधानिक दायित्व है, और अदालतों को सक्रिय रूप से इस अधिकार की रक्षा करनी चाहिए। *न्यायिक मिसाल:* सोसाइटी फॉर अनएडेड प्राइवेट स्कूल्स ऑफ राजस्थान बनाम भारत संघ (2012) में, सर्वोच्च न्यायालय ने सामाजिक एकीकरण के उपकरण के रूप में शिक्षा को मान्यता देते हुए RTE के प्रावधानों की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखा था।

सामाजिक समानता के लिए शिक्षा क्यों महत्वपूर्ण है?

शिक्षा समाज को कई आयामों में प्रभावित करती है:

सामाजिक: यह पीढ़ियों से चली आ रही जाति और वर्ग की बाधाओं को तोड़ती है। अध्ययनों से पता चलता है कि मिश्रित सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले स्कूलों के बच्चों में पूर्वाग्रह कम और सामाजिक विश्वास अधिक होता है।

- **नैतिक:** यह गरिमा और बंधुत्व को बढ़ावा देती है। डॉ. बी.आर. अंबेडकर शिक्षा को ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदायों की मुक्ति का प्राथमिक साधन मानते थे।
- **आर्थिक:** यह ऊपर की ओर बढ़ने (upward mobility) में सक्षम बनाती है। पूर्वी एशिया में प्राथमिक शिक्षा के विस्तार ने पीढ़ियों में आय की असमानता को कम करने में मदद की है।
- **लोकतांत्रिक:** यह सक्रिय नागरिकता का निर्माण करती है। सामान्य स्कूलों में नागरिक शिक्षा लोकतांत्रिक भागीदारी और सहिष्णुता को मजबूत करती है।

स्कूलों के माध्यम से समानता प्राप्त करने में मुख्य चुनौतियां

1. **प्रवेश से इनकार:** कानूनी आदेशों के बावजूद, स्कूल अक्सर अनौपचारिक रूप से RTE प्रवेश से इनकार करते हैं। कई मामलों में स्कूल गरीब माता-पिता को हतोत्साहित करने के लिए अनावश्यक दस्तावेजों की मांग करते हैं।
2. **गरीब परिवारों के लिए कठिन प्रक्रिया:** जटिल प्रक्रियाएं और जागरूकता की कमी पहुंच को बाधित करती है। कई शहरी मलिन बस्तियों में, माता-पिता प्रवेश फॉर्म भरने के लिए गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) पर निर्भर हैं।
3. **कक्षाओं में सामाजिक भेदभाव:** कभी-कभी समावेश से एकीकरण के बजाय कलंक (stigma) पैदा होता है। कुछ राज्यों से ऐसी खबरें आई हैं जहाँ RTE के छात्रों को अलग बैठाया जाता है या पाठ्येतर गतिविधियों से बाहर रखा जाता है।
4. **पड़ोस के स्कूलों की खराब गुणवत्ता:** गुणवत्ता में अंतर के कारण संपन्न परिवार निजी स्कूलों की ओर चले जाते हैं। ASER के सर्वेक्षण बार-बार सरकारी स्कूलों में सीखने के परिणामों के अंतर को दिखाते हैं, जिससे सार्वजनिक शिक्षा में विश्वास कम होता है।
5. **राज्यों में असमान कार्यान्वयन:** शिक्षा समवर्ती सूची (Concurrent List) का विषय होने के कारण इसमें विविधता है। कुछ राज्य RTE अनुपालन की सक्रिय रूप से निगरानी करते हैं, जबकि अन्य में प्रवर्तन तंत्र की कमी है।

सरकार द्वारा उठाए गए कदम

कानूनी और नीतिगत उपाय:

- शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020, जो सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों पर ध्यान केंद्रित करती है।
- एकीकृत स्कूल विकास के लिए 'समग्र शिक्षा अभियान'।

कल्याणकारी सहायता:

- **PM-POSHAN (मिड-डे मील योजना):** इसने नामांकन और पोषण में सुधार किया है। उदाहरण के लिए, तमिलनाडु के स्कूल भोजन कार्यक्रम ने गरीब बच्चों की उपस्थिति को काफी बढ़ाया।
- मुफ्त पाठ्यपुस्तकें, वर्दी और छात्रवृत्ति।
- कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों जैसे आवासीय विद्यालय।

संस्थागत सहायता:

- स्कूल प्रबंधन समितियां (सामुदायिक भागीदारी)।
- बाल अधिकार आयोग।

IAS-PCS Institute
Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

- डिजिटल प्रवेश पोर्टल और सूचना का अधिकार (RTI) तंत्र।

न्यायपालिका की भूमिका: न्यायपालिका ने सामाजिक-आर्थिक अधिकारों को लागू करके और हाशिए पर रहने वाले समूहों की रक्षा करके सामाजिक न्याय के संरक्षक के रूप में कार्य किया है। हालांकि, बार-बार न्यायिक हस्तक्षेप कार्यपालिका की क्षमता और जवाबदेही में कमियों को भी उजागर करता है।

आगे की राह: कानून को वास्तविकता में बदलना

- उल्लंघन के लिए दंड के साथ RTE प्रावधानों को सख्ती से लागू किया जाए।
- प्रवेश और शिकायत निवारण प्रक्रियाओं को सरल बनाया जाए।
- पड़ोस के स्कूलों की गुणवत्ता और बुनियादी ढांचे में सुधार किया जाए।
- विविध कक्षाओं को संवेदनशीलता से संभालने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाए।
- यह सुनिश्चित किया जाए कि समावेश से गरिमा और अपनेपन का भाव पैदा हो, न कि यह केवल एक औपचारिकता बनकर रह जाए।

निष्कर्ष: सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय हमें याद दिलाता है कि समानता केवल नीतिगत दस्तावेजों से प्राप्त नहीं होती है। यह साझा स्थानों — विशेष रूप से कक्षाओं — में दैनिक बातचीत के माध्यम से निर्मित होती है। जब बच्चे समान रूप से एक साथ सीखते हैं, तो समाज न्याय, समानता और बंधुत्व के संवैधानिक वादे को पूरा करने के करीब पहुंचता है।

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 (GS II – 15 अंक) "समाज में समानता की शुरुआत स्कूलों से होनी चाहिए।" शिक्षा का अधिकार अधिनियम पर सर्वोच्च न्यायालय के हालिया निर्णय के आलोक में, परीक्षण कीजिए कि शिक्षा सामाजिक समानता के लिए एक परिवर्तनकारी उपकरण के रूप में कैसे कार्य कर सकती है। कार्यान्वयन में चुनौतियों की चर्चा करें और उन्हें दूर करने के उपाय सुझाएं। (250 शब्द)

प्रश्न 2 (GS I – 10 अंक) भारत में सामाजिक असमानताओं को कम करने में सामान्य स्कूली शिक्षा (Common Schooling) की भूमिका पर चर्चा करें। हाल की न्यायिक टिप्पणियों के संदर्भ में अपना उत्तर स्पष्ट करें। (150 शब्द)

IAS-PCS Institute
Result Mitra
रिजल्ट का साथी